❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज की ओर से कृतज्ञ राष्ट्र को
69वें गणतन्त्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 41, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 जनवरी, 2018 से रविवार 28 जनवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

उत्साह, संकल्प और धूम-धाम से मनाएँ ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव ऋषि पर्व के रूप में मनाएँ – धर्मपाल आर्य

ऐसे विशेष अवसरों पर वेद और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ सुझाव

भारतीय काल चक्र गणना के अनुसार आदित्यों में उत्तम फाल्गुन मास का आगमन होता है तो ऋतुओं के राजा वसन्त भी विराजमान हो जाते हैं। जिनकी उपस्थिति में प्रकृति अपनी निराली छटा चारों ओर बिखेरना प्रारंभ कर देती है।

दिग्-दिगन्तों में जोश, उमंग, उत्साह, प्रेरणा से ओत्-प्रोत् हरियाली और फूलों की भीनि-भीनि सुगंध से जहां सारा विश्व महकने लगता है वहीं भारतीय जनमानस में एक तीव्र स्फटिंग की तरह क्रांति का संचार करने वाले पर्वों की दिव्य श्रृंखला प्रस्तुत हो जाती है इसीलिए भारतवर्ष को पर्वो का देश कहा जाता है । पर्व -उल्लास एवं प्रसन्नता का द्योतक है। उत्सव अर्थात् उत्साह पूर्वक किए जाने वाले कार्य जो दूसरों में भी उत्साह व प्रसन्नता का संचार कर देते हैं वहीं प्रेरणा दायक कार्य पर्व और उत्सव कहे जाते हैं। इसी वासन्ती पर्वो की श्रृंखला में आने वाले पर्व-वसन्त-पंचमी, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव, होली मंगल मिलन व नववर्ष (आर्यसमाज स्थापना दिवस) जैसे - पर्वो का संगम इस महान ऋतुराज वासन्ती वेला में होने वाला है।

वास्तव में पर्वों की उत्कृष्ट परम्परा भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि उसके विशुद्ध रूप उद्देश्य, उद्भव, परिणाम एवं मनाने के वैदिक, सामाजिक और भौगोलिक विधान एवं परम्परा को आगे प्रसारित करते चले जाएं। जिससे लाखों वर्षों पुरानी ये परम्पराएँ इसी प्रकार समाज का दिशा निर्देशन एवं मानव में महानता का संचार करती हुई आगे बढती रहे। ये उदात्त भावनाएँ जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक बृहद् रहस्यों को अपने में छिपाए हैं वही सामाजिक तौर पर भी ये अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को अपने में संजोये हुए हैं।

जब हम वसन्त-पंचमी के परिदृश्य में जाना चाहते हैं तो एक दग्ध चिंगारी हमारे रोंगटे खडे कर देने का कार्य करती है कि एक बालक हकीकत राय धर्म की प्रतिमूर्ति बनकर वीभत्स मृत्यु को सामने देखकर भी धर्म का किसी प्रकार भी त्याग नहीं करता है? उस महान् बलिदानी की यादों को लेकर ये वसन्त-पंचमी हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है। फाल्गुन कृष्ण दशमी का पर्व महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस के रूप में उनका स्मरण कराता है। जिसका आधारभूत पर्व एक महानपर्व महर्षि बोध दिवस, अथवा महाशिवरात्रि के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन जब हम पौराणिक जगत् में महाशिवरात्रि के हजारो साल के इतिहास को देखते हैं तो

समाज में पाखण्ड, अंधविश्वास और अज्ञानता के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिपात् नहीं होता है। लेकिन सन (1837) की वह महिमा मण्डित महाशिवरात्रि जिसनें एक महत् तत्त्व को जन्म दिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर "ऋषि बोध-रात्रि" के नाम से सुविख्यात् हो गई हैं। आज हम उस महान पर्व को वास्तविक स्वरूप में मनाने अथवा वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रचार प्रसार के दृष्टिकोण से अधिक

- *शेष पृष्ठ 5 पर*

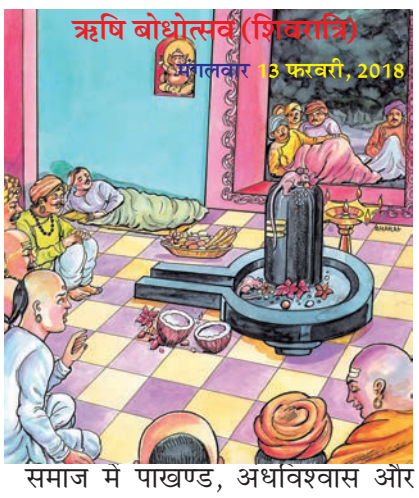

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती
194वाँ
जन्मोत्सव

फाल्गुन कृष्ण 10 तदनुसार शनिवार 10 फरवरी, 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 194वें जन्मोत्सव के अवसर पर

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

यज्ञ : सायं 3 बजे भजन संध्या : सायं 4 बजे प्रीतिभोज : सायं 7 बजे

दक्षिण दिल्ली	उत्तर पश्चिम दिल्ली
आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के सहयोग से **दशहरा ग्राउण्ड** श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-65	आर्यसमाज रोहिणी सै.-7 के सहयोग से **रामलीला मैदान** सै. -7, रोहिणी, दिल्ली-85

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
ओ. पी. वर्मा, प्रधान; सुशील आर्य, मन्त्री — आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी
ओमप्रकाश यजुर्वेदी, प्रधान — द. दि. वेद प्र. मंडल
नरेशपाल आर्य, प्रधान; संजीव आर्य, मन्त्री — आर्यसमाज रोहिणी सै.-7
सुरेन्द्र आर्य, प्रधान — उ.प. दि. वेद प्र. मंडल
रवि चड्डा, प्रधान — प. दि.वेद प्र. मंडल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभा, नई दिल्ली की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न : भारत में होगा इस वर्ष का

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्लीः 26-27-28 अक्तूबर, 2018

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान; प्रकाश आर्य, मन्त्री — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
महाशय धर्मपाल, प्रधान; सतीश चड्डा, महामन्त्री — आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

वेद-स्वाध्याय

प्रभु इन्द्र

शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः।। - ऋ. 1/53/3
ऋषिः **सव्य आङ्गिरसः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ- शचीव = हे सर्वशक्तिमन्! **पुरुकृत्** = बहुत-कुछ करने वाले! **द्युमत्तम** = अतिशय दीप्तिवाले! **इन्द्र** = परमेश्वर **अभितः** = सब ओर जो **इदम्** = यह **वसु** = ऐश्वर्य है वह **तव** = तेरा **इत्** = ही है ऐसा मैं **चेकिते** = बहुत अच्छी प्रकार जानता हूं, **अतः** = इसलिए इसमें से **अभिभूते** = हे विघ्नविनाशक! **संगृभ्य** = मेरे योग्य धन उठाकर **आभर** = मुझे दीजिए **त्वायतः** = तुझे अपनाने वाले **जरितुः** = मुझ स्तोता की **कामम्** = इच्छा, प्रार्थना को **मा ऊनयीः** = अपूर्ण मत रख।

विनय- हे परमैश्वर्यवाले इन्द्र! इस संसार में चारों ओर दिखाई देनेवाला और नाना प्रकार भोगा जाता हुआ जो ऐश्वर्य है वह सब तेरा है। पहले मैं इन ऐश्वर्यों को मनुष्य का ऐश्वर्य समझता था, परन्तु अब खूब अच्छी प्रकार जान गया हूं कि यह सब तेरा है- एकमात्र तेरा ही है। तेरे ही दिये अनन्त ऐश्वर्य को संसार भोग रहा है। ये भौतिक सुख देनेवाली सब वस्तुएं-प्रतिष्ठा, यौवन, प्रभुत्व आदि ऐश्वर्य, अभय, सत्त्वसंशुद्धि आदि दैवी संपत् और बड़ी-बड़ी आत्मिक सिद्धियां और विभूतियां, इन सब प्रकार के एक-से-एक ऊंचे ऐश्वर्य को यह संसार तुमसे ही पाकर भोग रहा है। हे सम्पूर्ण ऐश्वर्य के स्वामी! हे अतिशय ज्योतिवाले! हे सर्वशक्तिमान्! मैं तुझे एक बार देखकर तेरा हो चुका हूं, अपना सर्वस्व तुझे सौंपकर तेरा हो चुका हूं। अब तू ही मेरा अपना है। इस विश्व में मेरा अब और कोई नहीं है। तो फिर मैं अपनी प्रार्थना और किस के सामने करूं? अपनी अभिलाषा की पूर्त्ति के लिए अन्य किस की ओर देखूं? तुझे अपनाकर, हे सर्वैश्वर्यवाले! हे सर्वशक्तिमय! तुझे अपनाकर मेरी शुभ अभिलाषा कैसे अपूर्ण रह सकती है? तू पुरुकृत् है। तूने बहुत से भक्तों के लिए बहुत-कुछ किया है, इस संसार का सब-कुछ तूने ही बनाया है। तू एक क्षण में अभिलषित ऐश्वर्य की रचना करके दे सकता है। हे अभिभूते! सब विघ्नों और आवरणों के हटा देने वाले! तुम अपने अपरिमित ऐश्वर्य में से उठाकर मेरी इच्छा-भर ज़रा-सा ऐश्वर्य मुझे दे दो। मेरी अभिलाषा, कितनी ही कठिन, कितनी ही असम्भव-सी दीखती हो, पर तुम सब विघ्न-बाधाओं को अभिभव कर सकते हो। हे सब विघ्नों का विनाश कर सकने वाले! तेरे जैसे स्वामी को अपनाने वाले भक्त की प्रार्थना कैसे अधूरी रह सकती है? हे प्रभो! बाधा हटाकर इसे पूर्ण कर दो, पूर्ण कर दो! अपने अनन्त ऐश्वर्य में से उठाकर एक मुट्ठी-भर ऐश्वर्य मुझे भी दे दो। मेरी इतनी बड़ी भारी अभिलाषा तुम्हारे लिए सचमुच मुट्ठी-भर ही है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दलित आन्दोलन : अम्बेडकर से उमर खालिद तक?

दलित आन्दोलन भीमा कोरेगांव से चलकर राजधानी पहुंच गया या ये कहें कि अम्बेडकर से चलकर उमर खालिद तक पहुँच गया। आगे भविष्य में इसका सूत्रधार कौन होगा अभी तय नहीं हुआ है। कहा जा रहा है कि भीमा कोरेगांव शौर्य दिवस का मंच जब सजा तो इस मंच पर पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया, (जिस पर धर्मातरण के लगे संगीन आरोपों की जाँच एनआईए कर रही है), मूल निवासी मुस्लिम मंच, छत्रपति शिवाजी मुस्लिम ब्रिगेड, दलित ईलम आदि संगठन थे। मौजूद लोगों में प्रकाश आंबेडकर, जिग्नेश मेवाणी, उमर खालिद, रोहित वेमुला की मां राधिका वेमुला, सोनी सोरी, विनय रतन सिंह, प्रशांत दौंढ़, मौलाना अब्दुल हामिद अजहरी इत्यादि शामिल थे। इसके बाद पहले की तरह ही दलितों पर अत्याचार की कहानी सुनाई गई। वह यह कि आज भी दलितों पर अत्याचार होता है और अत्याचार करने वाले भाजपा-आर एस एस के लोग होते हैं। कहा गया भाजपा और संघ के लोग आज के नए पेशवा हैं। जिग्नेश मेवाणी ने तो सीधे प्रधानमंत्री को आज का पेशवा कहा। इसी कथानक को फिर तरह-तरह से दोहराया गया। फिलहाल न कथित दलित नेता अपनी बुराई सुनना चाहते हैं, ना सरकार और न ही आरोपी संगठन।

ये नाम और उपरोक्त संगठन दलित आन्दोलन और भीमा कोरेगांव में हुई हिंसा, तोड़फोड़ के पूरे किस्से का वह तेल है जिसे जातिवादी अपनी पिंडलियों पर रगड़-रगड़कर अगली किसी संभावित हिन्सा या आन्दोलन के लिए खुद को तैयार कर सकते हैं। लेकिन इस मामले के बाद यदि गौर करें तो मुख्य सवाल यही उभरता कि पूरे मामले से दलितों को क्या मिला? इस आन्दोलन में नाम आता है जिग्नेश, उमर खालिद, सोनी सोरी, विनय रतन सिंह, प्रशांत दौंढ़ और अब्दुल हामिद अजहरी। इससे साफ है कि पेशवा और ब्राह्मण तो बहाना है, यह एक ऐसे झुंड का जमावड़ा था, जो इस देश में नारा लगाते है कि भारत की बर्बादी तक, जंग चलेगी, जंग चलेगी, भारत तेरे टुकड़े होंगे आदि-आदि...। सवाल ये भी है कि ये लोग खुलकर अपने एजेंडे पर बात क्यों नहीं करते? ऐसा क्यों न कहा जाए कि ये झूठ का पुलिंदा बनाकर दलितों को मोहरा बना रहे हैं?

सवाल बहुत हैं लेकिन इनके जवाब बड़े विस्फोटक हो सकते हैं। सवाल दलित पार्टियों के रवैये पर भी है कि ये पार्टियां क्या अपनी भी सोच या दिशा रखती हैं या फिर हिन्दू बनाम दलित चिल्लाने वाली मीडिया के इशारे पर चल देते हैं? आप गौर से इन लोगों के चेहरों को देखो तो तुम्हें समझ में आयेगा कि दलित आन्दोलन की कमान इन लोगों के हाथ में रहने से क्या कोई समस्या हल हो सकती है? समस्याएं बढ़ेगी क्योंकि दलित कोई जाति या समुदाय ही नहीं बल्कि एक बहुत बड़ा धर्मातरण और सत्ता की सम्भावना का द्वार जो बना लिया गया है। ये द्वार समाज वाद के रास्ते इस्लाम वाद या बौद्ध वाद या फिर ईसाई वाद की तरफ जाता दिख जाता है।

बहरहाल ये वक्त आन्दोलन के मरीज को उसकी संगीन गलतियाँ याद दिलाने या धमकियों का नहीं है, बल्कि उदारता समानता की ठंढ़ी पट्टियां रखने का है। फिलहाल भारतीय जनमानस से भेदभाव के विभेद को मिटाने का ऐसा कोई मन्त्र दिखाई नहीं दे रहा है जिसका कठोरता से पालन हो व एक ही झटके में भेदभाव की रीढ़ टूट जाए, कारण इस भेदभाव को मिटाना न तो हमारा राजनैतिक तंत्र चाहता है और न ही तथाकथित दलित नेता। चार गाली मनुस्मृति को दी, चार गाली धर्म को, एक दो वर्णव्यवस्था को बस हो गया दलित उद्धार? वोट ली, चुनाव जीता मंत्री पद कब्जाया कुछ इसी तरह नेताओं ने सत्तर वर्ष घसीट दिए।

...भीमराव अंबेडकर की जो मुख्य लड़ाई थी वह वर्ण व्यवस्था के खिलाफ थी। वे चाहते थे कि इस देश में इंसान रहें, जातियाँ न रहें। आज दलित-चेतना का फैलाव अंबेडकर से बुद्ध तक तो हो गया पर बुद्ध और अम्बेडकर के सिद्धांतों से कोसों दूर चला गया, बुद्ध ने कहा था 'अप्प दीपो भवः' यानी अपना नेतृत्व खुद करो, लेकिन इसके उलट आज दलित समाज का नेतृत्व उमर खालिद, मौलाना अब्दुल हामिद अजहरी और पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया जैसे लोग और संगठन करने लगे हैं।...

अब सवाल है कि किस तरह होगा दलित उद्धार? मायावती का फार्मूला तो धर्म परिवर्तन है। लेकिन जिन्होंने धर्म परिवर्तन किया क्या उनका उद्धार हो गया? पिछले दिनों ही दलित ईसाई अपने लिए आरक्षण की मांग कर रहे थे। दूसरा जिग्नेश के अनुसार भाषणों और हिंसा या एक दो युद्ध की कहानियों की जीत के गौरव से यदि 70 सालों से सम्पूर्ण दलित जाति का उद्धार आरक्षण नहीं कर पाया तो धर्मपरिवर्तन या फिर बड़े-बड़े जुलूस कैसे कर पाएंगे? कहा जा रहा है शौर्य दिवस के मौके पर मंच पर चार मटके रखे थे। जिनपर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र लिखा था। उद्घाटन के अवसर पर इन मटकों को फोड़ा भी गया जोकि सही भी है जातिवाद ऊंच-नीच समाज की बुराई है पर यदि इन चार मटकों को तोड़कर आगे बढ़ना ही हैं तो जातिवाद का वह आरक्षण रूपी मटका भी क्या टूटना नहीं चाहिए?

भीमराव अम्बेडकर की जो मुख्य लड़ाई थी वह वर्ण व्यवस्था के खिलाफ थी। वे चाहते थे कि इस देश में इंसान रहें, जातियाँ न रहें। आज दलित-चेतना का फैलाव अंबेडकर से बुद्ध तक तो हो गया पर बुद्ध और अम्बेडकर के सिद्धांतों से कोसों दूर चला गया, बुद्ध ने कहा था 'अप्प दीपो भवः' यानी अपना नेतृत्व खुद करो, लेकिन इसके उलट आज दलित समाज का नेतृत्व उमर खालिद, मौलाना अब्दुल हामिद अजहरी और पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया जैसे लोग और संगठन करने लगे हैं। जो दलितों को उनके हक से दूर कर अपने ही समाज से नफरत करना सिखा रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन, समानता, भाईचारा और आजादी तथा जाति तोड़ो आंदोलन से विमुख होकर अवसरवादी समझौते करने तथा प्रतिकार की हिंसा की ओर धकेल रहे हैं। यदि आज दलित समाज एक अलग परम्परा-संस्कृति का निर्माण, जिसमें समानता, श्रम की महत्ता और लोकतांत्रिक मूल्यों के समायोजन में जीना चाहते हैं तो अपनी मांग खुद रखनी पड़ेगी। आज देश का राष्ट्रपति एक दलित परिवार से है यदि अब भी आपकी जंग पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया और उमर खालिद लड़ेंगे तो प्यारे भाइयों आपके आन्दोलन की दिशा धर्म से जोड़कर भटका दी जाएगी और आप यह समानता का यह युद्ध हार जाएंगे।

- सम्पादकीय

जन्मदिवस (23 जनवरी) पर पुण्य स्मरण

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम 'जानकीनाथ बोस' और माँ का नाम 'प्रभावती' था।

उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेजिडेंसी कॉलेज और स्काटिश चर्च कॉलेज से हुई, और बाद में सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया।

1921 में सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे, वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे। महात्मा गाँधी और सुभाष चंद्र बोस के विचार भिन्न-भिन्न थे लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते थे कि महात्मा गाँधी और उनका मकसद एक है, यानी देश की आजादी।

1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया। यह नीति गाँधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं थी। 1939 में बोस पुन: एक गाँधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर विजयी हुए। गांधी ने इसे अपनी हार के रुप में लिया। उनके अध्यक्ष चुने जाने पर गांधी जी ने कहा कि बोस की जीत मेरी हार है। गांधी के लगातार विरोध को देखते हुए उन्होंने स्वयं कांग्रेस छोड़ दी।

बोस का मानना था कि अंग्रेजों के दुश्मनों से मिलकर आजादी हासिल की जा सकती है। उनके विचारों के देखते हुए उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कोलकाता में नजरबंद कर लिया लेकिन वह अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जा पहुंचे।

सक्रिय राजनीति में आने से पहले नेताजी ने पूरी दुनिया का भ्रमण किया। वह 1933 से 36 तक यूरोप में रहे। यूरोप में यह दौर था हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद का। नाजीवाद और

फासीवाद का निशाना इंग्लैंड था, जिसने पहले विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी पर एकतरफा समझौते थोपे थे। वे उसका बदला इंग्लैंड से लेना चाहते थे। भारत पर भी अँग्रेजों का कब्जा था और इंग्लैंड के खिलाफ लड़ाई में नेताजी को हिटलर और मुसोलिनी में भविष्य का मित्र दिखाई पड़ रहा था। दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। उनका मानना था कि स्वतंत्रता हासिल करने के लिए राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ कूटनीतिक और सैन्य सहयोग की भी जरूरत पड़ती है।

नेताजी के नाम से प्रसिद्ध सुभाष चन्द्र ने सशक्त क्रान्ति द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से 21 अक्टूबर, 1943 को आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की तथा आजाद हिन्द फौज का गठन किया इस संगठन के प्रतीक चिह्न पर एक झंडे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बना होता था। नेताजी अपनी आजाद हिंद फौज के साथ 4 जुलाई 1944 को बर्मा पहुँचे। यहीं पर उन्होंने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' प्रसिद्ध नारा दिया।

भारत मां के ऐसे अमर सपूत, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सच्चे सिपाही नेताजी सुभाष चन्द्रबोस को आर्यसमाज का शत-शत नमन।

जन्मदिवस (28 जनवरी) पर पुण्य स्मरण

स्वराज्य केसरी

आर्य नेता लाला लाजपत राय

आजादी के महानायकों में लाला लाजपत राय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार कराता है। अपने देक्ष धर्म तथा संस्ति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी। उनके बहुविधि क्रिया कलाप में साहित्य-लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। एक साधारण से परिवार में लाला जी का जन्म 28-जनवरी-1865 को पंजाब राज्य के मोंगा जिले के दुधिके गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री लाला राधा किशन आजाद जी सरकारी स्कूल में उर्दू के शिक्षक थे जबकि उनकी माता देवी गुलाब देवी धार्मिक महिला थी। लाला राधा किशन जी के विषय में लाला जी स्वयं लिखते हैं की मेरे पिता पर इस्लाम का ऐसा रंग चढ़ा था की उन्होंने रोजे रखना शुरू कर दिया था। सौभाग्य से मुझे आर्यसमाज का साथ मिला जिसके कारण मेरा परिवार मुस्लमान बनने से बच गया। लालाजी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे व धन, आदि की अनेक कठिनाइयों के पश्चात् भी उन्होंने उच्चशिक्षा प्राप्त की। 1880 में कलकत्ता यूनिवर्सिटी व पंजाब यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षाएं पास करने के बाद उन्होंने लाहोर गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिला ले लिया व कानून की पढाई प्रारंभ की, लेकिन घर की माली हालत ठीक न होने के कारन दो वर्ष तक उनकी पढाई बाधित रही। लाहौर में बिताया गया समय लाला जी के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ और यहीं उनके भावी जीवन

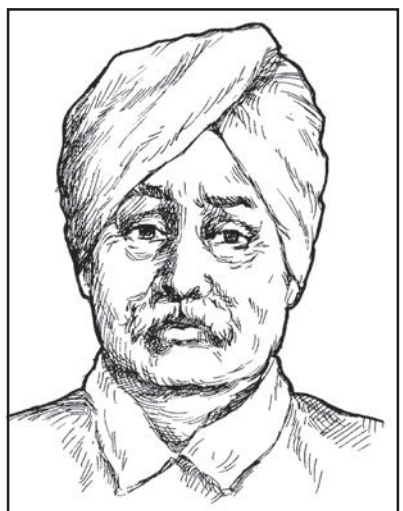

आर्यसमाज मेरे लिए माता के सामान हैं और वैदिक धर्म मुझे पिता तुल्य प्यारा है- लाला लाजपत राय

की रूप-रेखा निर्मित हो गयी ! उन्होंने भारत के गौरवमय इतिहास का अध्ययन किया और महान भारतीयों के विषय में पढ़कर उनका हृदय द्रवित हो उठा। यहीं से उनके मन में राष्ट्र प्रेम व राष्ट्र सेवा की भावना का बीजारोपण हो गया। कानून की पढाई के दौरान वह लाला हंसराज जी व पंडित गुरुदत्त जी जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आये। यह तीनों अच्छे मित्र बन गए और 1882 में आर्य समाज के सदस्य बन गए। लालाजी के व्यक्तित्व को यदि बहुत कम शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास करें तो उपयुक्त शब्द होंगे कि वे देशभक्ति की सजीव प्रतिमा थे। उनके लिए धर्म, मोक्ष, स्वर्ग और ईश्वर पूजा-सभी का अर्थ था देश सेवा, देशभक्ति और देश से प्यार। ऐसी महान आत्मा को उनके जन्मदिवस पर शत-शत नमन।

आर्यसमाज द्वारा आनन्द विहार झुग्गी-झोपड़ी कालोनी में यज्ञ

आर्यसमाज सूरजमल विहार, दिल्ली द्वारा आनन्द विहार झुग्गी झोपड़ी कालोनी में रविवार 21 जनवरी को सायं 4 बजे यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें कालोनी के 80-90 बालकों ने भाग लिया।

- अशोक गुप्ता, प्रधान

बोध कथा

संसार चक्र में आनन्द नहीं

सर न्यूटन थे न! बहुत बड़े वैज्ञानिक थे वे। 'इस पृथिवी में आकर्षण-शक्ति है, और वह प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है'-यह सिद्धान्त सबसे पूर्व उन्होंने वृक्ष से सेब को गिरते देखकर निकाला था। वैसे सिद्धान्त तो पहले ही था, उन्होंने इसे जानकर संसार को बताया।

एक दिन उन्हें गर्मी लगी तो एक पंखा बनाया उन्होंने। पंखा बन गया तो प्रश्न उत्पन्न हुआ-इसे हिलाये कौन? न्यूटन महोदय ने एक दन्दानेदार चक्र बनाया। ऐसा प्रबन्ध कियाकि चक्र चल तो पंखा भी चले, हवा देने लगे। परन्तु फिर प्रश्न उत्पन्न हुआ कि चक्र कैसे चले? न्यूटन ने चक्र के साथ तनिक ऊपर करके गेहूं के कुछ दाने रख दिये। चक्र में दो चूहे रख दिये। चूहों ने गेहूं के दानों को देखा तो उछल कर चक्र के ऊपर वाली सीढ़ी पर पहुंचे कि दानों तक पहुंच जायें, परन्तु वे तो दानों तक नहीं पहुंच पाए, उनके वज़न से चक्र हिल गया। वह सीढ़ी नीचे आ गई। चूहे फिर कूदे। चक्र फिर हिला। सीढ़ी फिर नीचे आ गई। इस प्रकार वे चूहे बार-बार छलांग लगाते कि अब मिल जायें गेहूं के दाने, अब मिल जायें। उनकी इस उछल-कूद से पहिया चलने लगा, पंखा हिलने लगा। न्यूटन को हवा मिलने लगी। चूहों को एक भी दाना नहीं मिला।

अरे ओ मानव! सोचकर देख, तू उन चूहों की भांति छलांग के पश्चात् छलांग लगाता है कि आनन्द के दाने तुझे मिल जायं, परन्तु इस संसार-चक्र में ऐसा फंस गया है कि तुझे ये दाने कभी मिलते नहीं।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अन्धविश्वास निरोधक वर्ष 2018 पर विशेष

जिम्मेदार कौन

....धर्म के अन्दर मूर्खता की मिलावट बड़ी सावधानी से की गयी है, इस कारण जब कोई अंधविश्वास के खिलाफ बात करता है तो उसे आसानी से धर्म विरोधी तक कह दिया जाता है। जबकि अंधविश्वासी व्यवहार खुलेआम शोषण को बढ़ावा देता है। हाल ही में कई बाबाओं का पकड़ा जाना, धर्म की आड़ में उनके शोषण के अड्डों का खुलासा होना कोई लुका छिपी की बात नहीं रही। पर सवाल अब भी वहीं खड़ा है कि इन सब तमाम पाखण्ड और अंधविश्वासों के लिए क्या केवल गरीब, अशिक्षित ही दोषी है या पढ़े लिखे देश के जाने-माने गणमान्य चेहरे भी?.....

अन्धविश्वास के चलते मुंबई के विरार में एक 11 साल की बच्ची की जान चली गयी। मासूम सानिया को कब्ज की शिकायत थी। डॉक्टर से इलाज न करवाकर सानिया की मां ने सानिया के साथ काला जादू किया। इस दौरान उसने सानिया के सीने पर चढ़कर डांस किया। काला जादू करने से पहले सानिया की चीख को बाहर जाने से रोकने के लिए उसके मुंह में कपड़े ठूंसे गए थे। दर्द तड़फती इस मासूम बच्ची के उसकी चाची ने उस वक्त उसके पैर पकड़े हुए थे। अंत में बच्ची ने दम तोड़ दिया। बेशक लोगों के ये जनाजा छोटा था लेकिन सानिया के सवालों ने इसे भारी जरूर बना दिया। यह मात्र संयोग नहीं है कि जिस समय तमाम टीवी चैनलों पर भूत-प्रेत और मृतात्माओं से संबंधित सीरियलों की बाढ़ आई हो उसी समय एक ऐसी हत्या का हो जाना भला किसी को चकित क्यों करेगा?

हम दुनिया के सामने अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों पर भले ही कितना ही इतरा लें, लेकिन इस हकीकत से मुंह नहीं मोड़ सकते हैं कि देश के एक बड़े तबके के जीवन में अंध विश्वास घुल- मिल सा गया है। आज भी झाड़-फूंक, गंड़ा-ताबीज, ड़ायन-ओझा, पशु या नरबलि जैसी कुप्रथाओं से निपटना एक बड़ी चुनौती भरा काम है। आजकल धर्म के आधार पर ऐसी-ऐसी बाते की जाने लगी हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं है।

भगवान की आज्ञा का अंदाज लगाकर अंधविश्वास शुरू करने वाले तमाम लोग पता नहीं इस खबर से कितने सहमे होंगे? लेकिन हर रोज किसी न किसी घर गाँव या शहर इस तरह की खबरें आना आम सी बात हो गयी हैं। पढ़े लिखे लोग चाहे वे वैज्ञानिक हों या डॉक्टर, अंधविश्वास के शिकार हो जाते हैं। दूसरी ओर वैज्ञानिक बातों के संस्कार आज की शिक्षा में अथवा समाज में नजर नहीं आते और वैज्ञानिक विपरीत व्यवहार करते हैं। इससे अगर बचना है, तो एक व्यूह निर्माण जरूर करना होगा। अंधविश्वास के विरुद्ध जनजागरण का कार्य नि:संकोच निडरता से और प्रभावी ढ़ंग से होना चाहिए। यह जागृति विज्ञान का प्रसार ही नहीं बल्कि मनुष्यता पर एक उपकार भी होगा।

दरअसल धर्म के अन्दर मूर्खता की मिलावट बड़ी सावधानी से की गयी है, इस कारण जब कोई अंधविश्वास के खिलाफ बात करता है तो उसे आसानी से धर्म विरोधी तक कह दिया जाता है। जबकि अंधविश्वासी व्यवहार खुलेआम शोषण को बढ़ावा देता है। हाल ही में कई बाबाओं का पकड़ा जाना, धर्म की आड़ में उनके शोषण के अड्डों का खुलासा होना कोई लुका छिपी की बात नहीं रही। पर सवाल अब भी वहीं खड़ा है कि इन सब तमाम पाखण्ड और अंधविश्वासों के लिए क्या केवल गरीब, अशिक्षित ही दोषी है या पढ़े लिखे देश के जाने-माने गणमान्य चेहरे भी? क्योंकि साल 2015 की बात है देश की वर्तमान लोकसभा अध्यक्ष इंदौर की सांसद श्रीमती सुमित्रा महाजन भी अंधविश्वास के इस कुण्ड में आहुति देते नजर आई थीं। जब मध्य प्रदेश के निमाड़ व मालवा अंचल में मानसूनी बारिश न होने से वहां के निवासी इंद्र देवता को मनाने की जुगत में जुटे थे तब पंढ़री नाथ स्थित इंदेश्वर मंदिर में पहुंचकर रूद्राभिषेक करने लगी। यहां तक भी ठीक था लेकिन उन्होंने अंधविश्वास की सारी हदे लांघते हुए माला भी जपना शुरू कर दी थी। पांच दिन बाद बारिश हुई लोगों ने माला का जपना, बारिश का आना एक जगह जोड़कर इस अंधविश्वास को आस्था का जामा पहना दिया।

हालांकि एक जिम्मेदार महिला होने के नाते उन पर यह सवाल खड़ा होना लाजिमी है कि आखिर इस तरह के ढ़कोसले से ही यदि तमाम काम हो सकते थे तो फिर देश के आम गरीब के टैक्स की राशि को व्यर्थ में ही मौसम से जुड़े वैज्ञानिक अनुसंधानों में क्यों गंवाया जा रहा है? इसके कुछ दिन बाद कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने अपनी आधिकारिक गाड़ी को इस अंधविश्वास की वजह से बदल दिया था कि उनकी गाड़ी पर कोंवा बैठ गया था।

कुछ इसी तरह का कृत्य कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री रहे बीएस येदियुरप्पा ने एक बार अपनी सरकार बचाने के लिए न केवल मंदिरों में पूजा-अर्चना कि थी बल्कि दुष्ट आत्माओं से रक्षा के लिए एक पुजारी से प्राप्त ताबीज को भी ग्रहण किया था। कमाल देखिये एक राजनितिक पार्टी काला जादू कर रही थी और दूसरी उससे डर रही थी यह भारत में ही संभव है। अधंविक्वास से ओतप्रोत इस तरह के कारनामों की भारत में कमी नही है। इस तरह का यह पहला मामला भी नही है। अक्सर हमें राजनेताओं द्वारा वास्तु और ज्योतिष के हिसाब से घरों व कार्यालयों का चुनाव या उसमें फेरबदल कराने की कोशिशें भी देखने-सुनने को मिलती रही हैं।

नेता हो या खिलाड़ी या फिर जाने माने अभिनेता देश को दिशा देने वाले कर्णधारों को लेकर अंधविश्वास की ये खबरे हमें पढने-सुनने व देखने को मिलती रहती हैं। हमारे ये नीति निर्धारक ज्योतिषियों, तांत्रिकों, वास्तुविदों की सलाह पर अच्छा मुहूर्त देख कर पर्चा दाखिल करने, सरकारी आवास का नम्बर चुनने और खिड़की दरवाजे की दिशा बदलने, झाड़-फूंक वाले ताबीज पहनने से भी गुरेज नहीं करते हैं। जब नियम नीतियों, कानूनों को अमलीजामा पहनाने वाले लोग ही स्थितियों को तर्कों की कसौटी पर परखने के बजाय एक अंधी दौड़ में शामिल हो जाएं तो आम लोगों में तर्कसंगत सोच के विकास की उम्मीद भला कितनी की जा सकती है? वैज्ञानिक के अवैज्ञानिक व्यवहार को सुधारने के लिए जागरुकता अनिवार्य हो गई है। लेकिन कटु सत्य यह है कि जनजागरण के प्रमुख स्थानों पर ही अंधविश्वास का डेरा है। उससे तो यही प्रतीत हो रहा है कि कोई न कोई इसे पाल-पोस कर समाज में जिन्दा रखने का पक्षधर है। यदि ऐसा है तो फिर किसी मासूम सानिया की मौत पर सवाल कौन खड़े करेगा या कौन इस तरह की मौत का जिम्मेदार होगा?

- विनय आर्य, महामन्त्री

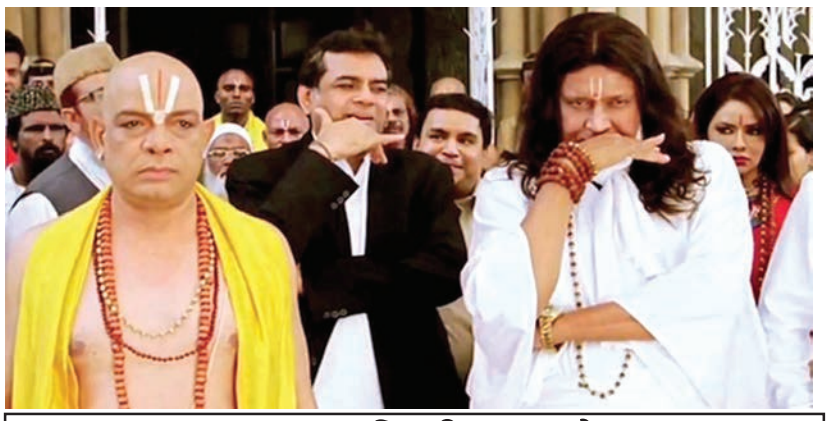

पुस्तक परिचय

क्रान्तिवीर चन्द्रशेखर आजाद और उनके दो गद्दार साथी

काफी पुरानी बात है। अंग्रेजों का जमाना था। गुप्तचर विभाग का बड़ा बोलवाला था। अफसरों की बुलन्दी के क्या कहने! उन्हीं के दम-खम पर अंग्रेजी हुकूमत टिकी हुई थी। मजाल है जो पत्ता खटके और इन्हें पता न चले! ऐसा दबदबा था इनका। रायबहादुर शम्भूनाथ एम.बी.ई (मेम्बर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर) राय बहादुर टीकाराम एम.बी.ई और खान बहादुर मुहम्मद नासिर खां की तूती बोलती थी पूरे प्रान्त में। मुखबिरों का ऐसा जाल बिछा रखा था तीनों ने कि इनकी नजर से बच सकना असम्भव तो नहीं, कठिन अवश्य था।...

.....ऐसे ही आजादी के संस्मरणों को दर्शाती पुस्तक **''क्रान्तिवीर चन्द्र शेखर आजाद और उनके दो गद्दार साथी''** को आप अपने इष्ट मित्रों रिश्तेदारों को व गणतन्त्र दिवस के अवसर पर भेंट कर सकते हैं।

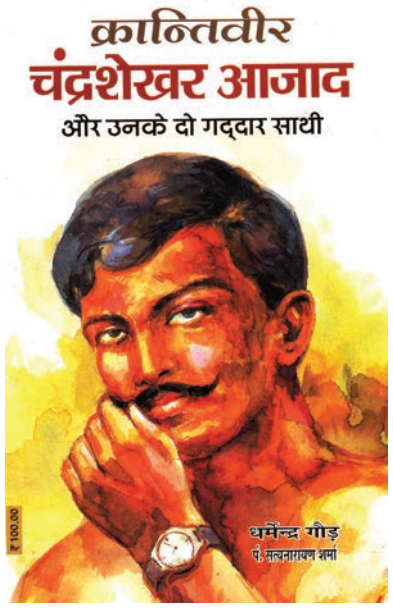

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

उत्साह, संकल्प और धूम-धाम से मनाएँ ऋषि पर्व

प्रथम पृष्ठ का शेष

उपयोगी हो सके, कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव निम्न प्रकार है –

1-महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि-पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मुहल्ले में घर-घर जाकर विशेष यज्ञों का आयोजन करें। साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के संबंध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें। उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की ठीक-ठीक जानकारी हो सके।

2-प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज' फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

3- नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और बाल प्रतियोगिताओं का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

4- महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग ऋषिपर्व को स्मरण दिलाने के लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने की अभी से तैयारी प्रारंभ कर दें।

5- महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य का वितरण के लिए भी तैयारी करें। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें।

6- प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद् स्तर पर आयोजन करें ।

7- समाज के असहाय, निर्बल, रोगी और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन करें। अपने घर, परिवार, आस-पास के लोगों को मिठाइयां बांटें। आर्यसमाजें क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टरों, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। इस हेतु बालोपयोगी कुछ वैदिक साहित्य यथा- 'मानव कल्याण के स्वार्णिम सूत्र, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव बैनर, लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द की रंगीन चित्रावली, एवं आर्यसमाज के कार्य एवं इतिहास की जानकारी देता 'एक निमन्त्रण' पत्रक आदि विशिष्ट प्रचार सामग्री विशेष रूप से धर्म प्रचार हेतु दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।

8- स्थानीय स्तर पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि और विज्ञापन देकर प्रत्येक आर्य महानुभाव अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दे सकते हैं ।

9- आर्य समाज के स्वार्णिम इतिहास पर कार्यशालाएँ शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी प्रत्येक दृष्टि से उत्तम होगा ।

10- जनहित में परोपकार एवं सेवा वाले कार्यो जैसे चिकित्सा शिविर, सामूहिक विवाह, रक्तदान शिविर और चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन जैसे अनेक सेवाभावी कार्य इस विशेष अवसर पर किए जाने चाहिए ।

11- महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस एवं बोध दिवस की बधाई 'ऋषि-पर्व की शुभकामनाओं के रूप में अवश्य प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सभी शुभचिन्तकों को भेजनी चाहिए ।

उपरोक्त प्रकार से आर्य पर्वों को मनाएँ, इनके उद्देश्य एवं उपयोगिता को संज्ञान में रख अन्यों को भी अवगत कराएं।

- विनय आर्य, महामन्त्री

मातृशक्ति

आदर्श दिनचर्या

गतांक से आगे -

चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्र आदि प्रभु की दिव्य विभूतियाँ रातभर पृथ्वी तल पर अमृत बरसाती रहती हैं तथा प्रात:काल सूर्य में से उष: नाम की एक किरण निकलती है जोकि जगती में अमृत का संचार करती है। इसीलिए प्रभात समय को अमृत वेला तथा उष:काल कहा गया है। प्रात:काल इन्हीं दैवी शक्तियों के अमृत को लेकर वायु मन्द-मन्द गति से चलती है। उस अमृतमयी वायु के शरीर में लगने से शरीर में तेज,बल, आरोग्यता, स्फूर्ति और उत्साह का संचार होता है। रक्त शुद्ध और लाल बनकर शरीर में तेजी से भ्रमण करता है, जिससे रक्त सम्बन्धी रोगों का नाश होता है। प्रात:काल की शुद्ध वायु रोगों की अचूक तथा अमोघ औषधि है। अत: प्रात: भ्रमण करने से सब रोगों की निवृत्ति तथा आरोग्यता की वृद्धि होती है। जठराग्नि प्रदीप्त होकर भोजन भली प्रकार पचता है वद्धकोष्ठता दूर होती है। नियमानुसार भ्रमण करने से पैरों, घुटनों, जाँघों और कमर में मजबूती तथा सौन्दर्य के बढ़ने के साथ-साथ भुजाओं, गर्दन ओर मेरुदण्ड की हड्डियों में बल शक्ति तथा मांसपेशियों में दृढ़ता आती है। नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। नियमपूर्वक भ्रमण करने वाला पुरुष सदा नवयुवक बना रहता है क्योंकि इससे जीवन शक्ति बढ़ती ओर वृद्धावस्था के कोषों के प्रमाणु दूर होकर शरीर के प्रत्येक अंग में जीवनीय शक्ति, स्फूर्ति, दृढ़ता तथा स्वास्थ्यप्रद गति का संचार होता है। शरीर की धातुएं और उपधातुएं शुद्ध और पुष्ट होती हैं। मनोद्वेग, आलस्य, चिन्ता, दुर्बलता, भय और रोग आदि का नाश होता है। मनुष्य बलवान्, रूपवान व बुद्धिमान बन जाता है। प्रात: भ्रमण करने से न केवल शारीरिक प्रत्युत मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों का भी विकास होता है। अत: प्रतिदिन भ्रमण करना स्वास्थ्याभिलाषी जनों को अपनी दिनचर्या का एक आवश्यक अंग बना लेना चाहिए।

प्रात: भ्रमण के बाद हमारी दैनिक दिनचर्या में हमें कौन सा महत्त्वपूर्ण कार्य करना चाहिए जिससे हमारा स्वास्थ्य और शरीर हृष्टपुष्ट रहे, इसकी जानकारी आर्य सन्देश के अगले अंक में जरूर पढ़ें।

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की कार्यशाला सम्पन्न

आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के ग्रीष्मकालीन वार्षिक प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों क लिए दिनांक 5 जनवरी, 2018 को आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर में 3 दिवसीय वृहद कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में उपस्थित आर्य वीरांगनाओं को वरिष्ठ शिक्षक श्री दिनेश आर्य जी द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। सभाप्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं आर्यसमाज के प्रधान श्री मनवीर सिंह राणा जी द्वारा वीरांगनाओं को पुस्कृत किया गया। दल की संचालिका श्रीमती शारदा आर्य जी ने आर्य वीरांगनाओं को सम्बोधित किया एवं शिविर की व्यवस्थाओं में सहयोगी समस्त अधिकारियों का धन्यवाद किया।

Veda Prarthana - 29

God's Worship Should Always be Truthful and Not Hypocritical

- Acharya Gyaneshwarya

सत्यमिद्वा उ तं वयमिन्द्रं स्तवाम नानृतम्। महाँ असुन्वतो वधो भूरिज्योतींषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः।।

Satyamidva u tam vayamindram stavam nanrtam. Mahan asunvatoadho bhuri jyotishi sunvato bhadra indrasya ratayah.

(Rig Veda 8:62:12)

Vayam we should va u without any dougy, satyam it truthfully only stavam worship tam indram You, God. You are the Master of Benevolence and King of all kings, na anrtam we should never do false or hypocritical worship of God. Asunvato whereas a lazy,dishonest person, mahan vadho in the long haul suffers great misery and loss, sunvato a hardworking and honest person attains jyotishi bhoori a lot of enlightenment, joy and happiness. Indrasya God's ratayah bhadra gifts to mankind are always benevolent.

At various places in the Vedas and related seriptures such as the Upanishads, Darshanas and even unrelated texts like Puranas, it is stated that a devotee who worships God acquirs wisdom, health, wealth, courage, strength, happiness, peace, liberation, fame and prosperity in life. However, in the eurrent world it is often seen that an apparent devotee of God is often poor, weak, cowardly, discouraged and unhappy. Why is it so? The answer to this question is that the so called devotee usually worships a false God and by wrong means. Such suffering devotees have fundamental gross misconceptions about God as well as their method of worship and devoion is wrong. Such devotees desires and goals in life as well as during worship are truly not directed towards realizing God or following virtue in life but instead are directed towards acquiring wealth and prosperity by whatever means as possible; the worship is a ritual to please and barter with God. A true devotee of God who does true Eeshwar-stuti-prarthana-upasana i.e. genuinely meditates and worships God will always progressively acquire wisdom, strength, fulfillment, peace and joy in life. Moreover, the true devotee even if he/she encounters obstacles in life's path will face them with courage and not suffer.

Vedoc scro[tires state that ultimately, truth always prevails and not untruth or lies. Like God, truth is always benevolent and in the long haul of life it gives us happiness, courage and strength. While these statements are true, we must remembe that for the truth to prevail, persons who have made a commitment to follow truth in life must have the courage to fight for it, have patience and be organized together with like minded persons. Such persons must be brave and make every effprt at everuy opportunity to promote truth even if they have to sacrifice their life to defend truth. Otherwise, organized crooked persons (Ike most of the current politicians in India and many other countes in the world) through vocal propaganda, intimidation and other devious methods such as lies, bribery and deception are able to promote to the public and the nation, the idea that it is okay to acquire wealth and prosperity by any means possible. Common public staarts to think that such individuals (crooked though they themselves perhaps should also follow a similar course in life. Though devious and croode persons may be financially prosperous, may own big houses and other luxurious amenities and outwardly appear successful, in reality they are not happy nor do they have internal (mental) peace. God's message to human beings through Veda mantras is that people who are honest and virtuous in their actions i.e. truly follow dhaarma as well as work hard to earn their wealth, in the long haul of life are happier, healthier, live longer, have virtuous children, as well as are more brave, fearless, fulfilled, contented and peaceful in life, as such they achieve true prosperity.

According to the Vedas, there are two types of mritu (death), the first is the ultimate death of the physical dody when the body needs to be cremated or buried to prevent the rotting of the body. The second type of death is unhappiness and the constant suffeing of the spirit, mind and/or the physical body. The latter is the fate of the persons who are devious and have crooked character and habits described in the above paragraph because their mind is full of bad or evil values whic constantly generate doubt, worries, fears and lack of peace that gnaws at the mind; such aare the God's rules for manking. On the other hand, people who have integrity as well as follow truth, dharma, virtuous values and work hard not only earn wealth andphysical prosperity, but Benevolent God also gices them enlightenment, inspiration, strength, courage, fearlessness as well as mental peace and joy. Such persons progressively acquire growth and succes in their work, personal, family and social life as wellas earn good fame and honor from others.

God is always benevolent to mankind, however, God punishes those persons who have acquired their wealth and physical prosperity by crooked means. People who are liars, dishonest, devious and crooked in their thoughts, words, and actions but go through the ritual of worship to please God, as well as those persons who deny the existence of God and therefore feel free to do similar evil and dishonest actions, while they may flourish for a while, their wealth and prosperity eventually tumbles like a giant tree is uprooted and falls during a hurricane (also see mantra # 28).Their family life often ends in tatters and some such persons even end up in the jail. Such persons do not know what true Eeshwar-stuti-prarthana-upasana i.e. genuine worships of God is and what are its benefits. All persons (even those who are extremely wealthy and prosperous) encounter many obstacles in life that cannot be resolved by wealth; the solutions instead require wisdom, thoughtful analysis, courage, perseveance and patience, virtuous values which one can obtain from God. Therefore, dear friends let us all perform true worship of Supreme Benevolent God withe our body, mind and soul by following truth, honesty, hare work, selflesness and other virtues in life as well as work together with like minded persons in an organized manner. This way we will experience unique divine benevolen gifts such as internal peace, equanimity, joy and bliss in our lives as well as love for all living beings, internal gifts that only God can provide us, there is no other way.

(For benefits of virtuous conduct in life also see mantra # 7, 9, 19, 24, 25, 26 and 27)**To Be Continue....**

प्रेरक प्रसंग

जब वीर चिरंजीलाल की माता का देहान्त हुआ

उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द के वीर शिष्यों को सत्य का प्रकाश करने के कारण और अन्धकार का निवारण करने के अपराध में कैसी-कैसी यातनाएँ सहन करनी पड़ीं, इसका एक उदाहरण वीर चिरंजी लाल जी का जीवन है। राहों जिला जालन्धर में आपकी वृद्ध माताजी का देहान्त हो गया।

पौराणिकों को एक स्वर्ण अवसर हाथ लगा। इन लोगों ने यह निर्णय लिया कि कोई भी पौराणिक हिन्दू वीर चिरंजी लालजी की माताजी के शव के दाह-संस्कार में भाग न लेगा। अर्थी को कन्धा देने वाला कोई दूसरा आर्य पुरुष वहाँ नहीं था। पौराणिकों ने कहा कि चिरंजी लाल पाषाण पूजा, भूत-प्रेत, जल-स्थलमय तीर्थों, देवी-देवताओं, जातिभेद तथा अस्पृश्यता का घोर खण्डन करता रहता है। यदि अपने किये के लिए चिरंजी लाल क्षमा माँगे तो इसकी माता की अर्थी को कन्धा दिया जा सकता है।

बड़ी विकट स्थिति थी। घर में माता का शव पड़ा है। अब क्या किया जाए? चिरंजीलाल ने वही निर्णय लिया जो इतिहास के प्रवाह को चीरने वाले महापुरुष लिया करते हैं। चिरंजी लालजी ने माता के शव को एक चादर में बाँधकर ऐसी गट्ठरी बना ली, जैसी पंजाब में फेरीवाले बनाते हैं। इस गठरी को अपने पीछे बाँध लिया।

महर्षि दयानन्द का अलबेला अकेला शव को पीठ पर लेकर चल पड़ा। उसके गले में रस था। वाणी में ओज था, हृदय में धधकते अंगार थे और आत्मा बलवान् थी कविता रचने की क्षमता भी प्रभु ने दे रक्खी थी। विरोधी सोच रहे थे कि अब यह माँ की अन्त्येष्टि कैसे करेगा? दहन-भूमि में शव को कैसे ले-जाएगा?

चिरंजीलाल शव की गट्ठरी बनाकर चल पड़ा। श्मशान भूमि को जाते हुए पंजाब के स्यापे के विलाप की शैली में यह गाना आरम्भ किया- चिरंजी इक तेरी माँ मर गई, दूजा पा लयाई पोपाँ ने घेरा। चिरंजी इक तेरी माँ मर गई...

छाती को कूटता, स्यापा करता हुआ धर्मवीर श्मशानभूमि की ओर बढ़ता गया। उसके गान में करुणा थी। उसके हृदय में आज एक विशेष तड़प थी। उसके शब्दों ने, उसके गीत ने पत्थर पूजने वाले, पत्थर-हृदय विरोधियों को भी रुला दिया। वे पिघल गये। जो कोई उसे सुनता, वही उसके दर्दभरे शब्दों को सुनते ही बदल जाता। अब कई विरोधी उसका साथ देने को तैयार हो गये परन्तु वीरवर ने किसी को भी आगे बढ़कर अपनी माता के शव को हाथ न लगाने दिया। इस घटना पर वीरजी ने एक काव्य रचा-

चिरंजीलाल की वालदा की वफात-
चिरंजीलाल के गान में मातृ-भक्ति का गूढ़ भाव तो था ही, उसके विलाप में ऋषि दयानन्द के मिशन का प्यार तथा अपने मन्तव्यों के लिए, ईश्वर के अनादि-ज्ञान वेद के लिए मर मिटने की चाह और अदम्य उत्साह भी भरा हुआ था।

यह घटना सुनने और पढ़ने में छोटी लगती है, परन्तु ऐसा साहस और ऐसी शूरता कोई असाधारण व्यक्ति ही दिखा सकता है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ ! संस्कृत सीखें

ध्यान रखने योग्य नियम - 39

गतांक से आगे....

1.''मैं'' के साथ उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है।

1) अहं पठामि। 2) अहं लिखामि।

2. ''त्वम्'' के साथ मध्यम पुरुष का प्रयोग होता है।

1) त्वं पठसि। 2) त्वं लिखसि।

''त्वम्'' के स्थान पर यदि भवान् शब्द का प्रयोग हो तो प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है।

1) भवान् पठति। 2) भवान् लिखति।

3) ''अहम्'' या ''त्वम्'' के अलावा किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है।

1) सः पठति। 2) सः लिखति।

संस्कृत भाषा में कुछ ध्यान रखने योग्य बातें-

1) बिना प्रत्यय लगाए किसी शब्द या धातु का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

उदाहरण- मूल शब्दों जैसे गृह, पुस्तक, भोजन, पठ्, रक्ष् आदि का प्रयोग नहीं किया जा सकता बल्कि गृहम्, पुस्तकम्, भोजनम्, पठति, रक्षति आदि का ही प्रयोग होगा। 2) व्यंजन आगे के स्वर में मिल जाता है।

उदाहरण- अहम् + अद्य= अहमद्य।
त्वम् + इदानीम् = त्वमिदानीम्।
अहम् + आगच्छामि= अहमागच्छामि।

3) संस्कृत भाषा में च का प्रयोग एक शब्द के बाद किया जाता है।

उदाहरण- रामः कृष्णः च (राम और कृष्ण)

2)फलं पुष्पं च। 3) सीता गीता च।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में 28 जनवरी 2018 को आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर दयानन्द मठ रोहतक में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आयोजित होगा जिसमें आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल हि.प्र.), श्री गंगा प्रसाद जी (राज्यपाल मेघालय), मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह, एम. डी.एच. चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी एवं विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी, वैदिक विद्वान, संन्यासीवृन्द भाग लेंगे।

- मा. रामपाल, प्रधान

झुग्गी-झोपड़ी में गर्म कपड़े बांटे

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्त्वावधान में सभा प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा के नेतृत्व में राजीव नगर श्रमिक बस्ती में झुग्गी झोंपड़ी में रह रहे बच्चों को ऊनी वस्त्र वितरित किए। मजदूर राम चंदर ने कहा कि आपने सर्दी में हम मजदूरों के बच्चों को जो गर्म कपडे प्रदान किए ये बहुत बडा धर्म का कार्य है।

- अर्जुनदेव चड्ढा, प्रधान

19वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

दिनांक : 4 फरवरी, 2018
स्थान : आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

पंजीकरण फार्म सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए मो. नं. 9540040324 से सम्पर्क करें।

- एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली

75 वर्ष से अधिक आयु वर्ष के कार्यकत्ताओं के लिए शुभ सूचना

दिल्ली के वे व्योवृद्ध आर्य महानुभाव जो अपने जीवन के आरम्भ से ही आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान दे रहे हैं और जिनकी आयु 75 वर्ष से अधिक हो चुकी है, से निवेदन है कि अपने अनुभव एवं जीवन परिचय प्लेन कागज पर साफ-साफ लिखकर अथवा टाइप कराकर फोटो सहित, 'सम्पादक, आर्य सन्देश' के नाम 'दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा-15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' पर भेजने की कृपा करें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी किया जा सकता है। आपका अनुभव व जीवन परिचय नवयुवकों को प्रेरणा देने के उद्देश्य से आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा।

- महामन्त्री, 9958174441

वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से हार्दिक निवेदन

आर्यजगत के समस्त आर्य विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से निवेदन है कि निम्नलिखित विषयों पर अपने शोधपूर्ण व प्रमाणित लेख आर्य सन्देश में प्रकाशनार्थ प्रेषित करें। आपके लेखों को आपके नाम व पते सहित आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित भी किया जाएगा। आपसे विशेष निवेदन है कि यदि आप किसी बात की पुष्टि के लिए किसी पुस्तक से कोई उद्धरण लेते हैं तो उस पुस्तक का नाम, प्रकाशक एवं पृष्ठ सं. अवश्य लिखें। कृपया अपना लेख ए-4 साईज के प्लेन कागज पर 1000 से 1500 शब्दों में साफ-साफ लिखें/कम्प्यूटर से टाईप कराकर भेजें। कृपया एक बार में केवल एक विषय पर लिखें। विषय वस्तु को केन्द्र में रखते हुए सकारात्मक लिखें। भविष्य में आपके लेखों को प्रवचनों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, अत: मौलिकता और प्रमाणित बनाए रखें। विषय इस प्रकार हैं-

1. महाभारत का युद्ध एवं उसके परिणाम।
2. जीने की कला और आर्य समाज।
3. मनुस्मृति - वैदिक मान्यता क्या है?
4. स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं मनुस्मृति,
5. महर्षि दयानंद एवं उनके ग्रंथ।
6. स्वामी दयानन्द एवं श्रद्धानंद जी,
7. महात्मा मुंशीराम कैसे बने स्वामी श्रद्धानंद
8. आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास,
9. स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज जीवन एवं आर्य समाज,
10. स्वामी श्रद्धानंद एक सामाजिक क्रांतिकारी

आप अपने लेख निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

सम्पादक, साप्ताहिक आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com

चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

माघ माह में लगने वाले मेला रामनगरिया पांचाल घाट फर्रुखाबाद में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद द्वारा 7 से 31 जनवरी 2018 तक मानव उत्थान, विश्व कल्याण की भावना के साथ तथा वैदिक धर्म-प्रचार-प्रसार हेतु सातवें भव्य चरित्र निर्माण शिविर का सभा प्रधान आचार्य चन्द्र देव शास्त्री जी के सानिध्य में किया जा रहा है। शिविर में प्रतिदिन यज्ञ तथा योगशिविर का आयोजन किया जायेगा। 28 जनवरी को विराट कवि सम्मेलन का आयोजन होगा।

-संदीप कुमार आर्य, मन्त्री

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज वडोदरा के तत्त्वावधान में श्री फत्तेसिंह आर्य अनाथाश्रम कारेलीबाग, वडोदरा में 18 से 25 दिसम्बर तक आचार्य श्री विद्यादेवी (नोएडा) के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री ओमप्रकाश हंगामा जी एवं उपदेशिका कु. किरन के भजनोपदेश हुए।

-राजेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान

पत्रकार चाहिए

महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों, मन्तव्यों, आर्यसमाज की मान्यताओं, कार्यों और गतिविधियों को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को एक सुयोग्य पत्रकार की आवश्यकता है जो प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी गतिविधि को वायरल करा सकने में सक्षम हों। पत्रकारिता में स्नातक/परास्नातक महानुभाव अपना बायोडाटा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेजें। आर्य महानुभावों को प्राथमिकता। वेतन योग्यतानुसार। ***- महामन्त्री***

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

43. आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन 5100
44. श्री प्रियंक सुपुत्र भोपाल सिंह सागरपुर, दिल्ली 200
45. आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली 11000
46. आर्यसमाज कसरावद जिला- खरगौन (म.प्र.) 2000

- क्रमश:

आप भी पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें। 100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। *- महामन्त्री*

शोक समचार

श्रीमती पुष्पा खुल्लर का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री, आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान एवं रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल राजा बाजार के चेयरमैन श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी की पूज्य सासू माँ एवं श्रीमती रश्मि वर्मा जी की पूज्य माता श्रीमती पुष्पा खुल्लर जी का 88 वर्ष की आयु में 7 जनवरी को में निधन हो गया। उन्होंने कन्या महाविद्यालय जालन्धर से प्रभाकर तक शिक्षा ग्रहण की थी। वे सुप्रसिद्ध कवियत्री थीं। वे अपने पीछे 2 सुपुत्र एवं दो सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा चण्डीगढ़ में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर परिवार की ओर से उनकी स्मृति में अन्य संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भी दान राशि भेंट की गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं हेतु सूचना

आर्य स्वास्थ्य परिषद् का गठन

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं तथा आर्यजनों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज की एक सेवा ईकाई आर्य स्वास्थ्य परिषद् का निर्माण करना चाहती है। इस हेतु दिल्ली की आर्यसमाजों में संचालित औषधालयों (डिस्पेंसरी)/चिकित्सीय सेवाओं की जानकारी अपेक्षित है, जिससे उनके समय, सेवा, अनुभवों का लाभ प्राप्त करके जन-साधारण को उपलब्ध कराया जा सके। अत: उन सभी आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं जिनमें किसी भी प्रकार की कोई भी स्वास्थ्य सेवा एलौपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी, प्राकृतिक चिकित्सा आदि कोई भी पद्धति संचालित हैं। कृपया वे इस व्यवस्था से सम्बन्धित अधिकारियों/ व्यक्तियों के नाम, पदनाम, पते, फोन नं. आदि औषधालय/चिकित्सालय/ डिस्पैंसरी के संक्षिप्त विवरण के साथ यथाशीघ 'महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते अथवा सभा की ईमेल aryasabha@yahoo.com पर भिजवाने की कृपा करें ताकि सभा आप सभी के सहयोग से इस दिशा में आगामी कार्यवाही हेतु आगे बढ़ सके। अधिक जानकारी के लिए कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी 9540040322/9717174441 से सम्पर्क करें।

-विनय आर्य, महामन्त्री

सोमवार 22 जनवरी, 2018 से रविवार 28 जनवरी, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25/26 जनवरी, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 जनवरी, 2018

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित

विशाल ऋषि मेला

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2074 तद्नुसार मंगलवार, 13 फरवरी, 2018

स्थान : रामलीला मैदान (अजमेरी गेट), नई दिल्ली-2

यज्ञ : दोपहर: 1.30 बजे ध्वजारोहण : दोपहर:2 .30 बजे

सार्वजनिक सभा : दोपहर 3.00 बजे से 6.00 बजे तक

मधुर भजन एवं संगीत | बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियाँ

सार्वजनिक सभा | "एक रूपीय यज्ञ"

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।

इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र कुमार रैली	सतीश चड्डा	अरुण प्रकाश वर्मा
प्रधान	व. उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

50 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र

100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9540040339

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

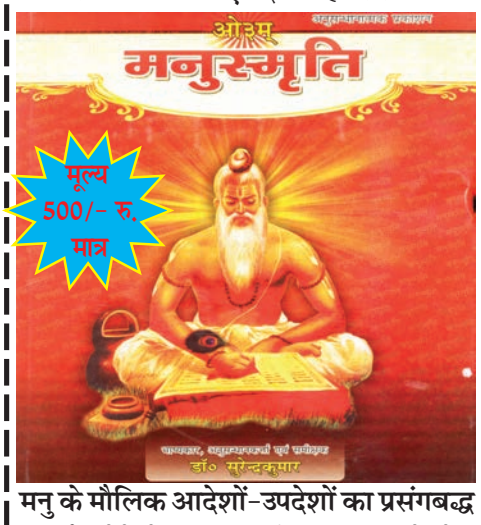

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~680~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,

नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह